कृषि नवाचार
हिन्दी पत्रिका
ISSN: 3048-6092
https://www.krishinavachar.in
खण्ड 01 भाग 06 सितम्बर, 2024

फूलगोभी में लगने वाले कीट एवं रोग

रोहित कुमार
एम०एस०सी० (कृषि), उद्यान विज्ञान विभाग, अमर सिंह कॉलेज, लखावटी, बुलन्दशहर, (उ०प्र०)
E-mail: rohitramesh30111991@gmail.com

फूलगोभी (ब्रेसिका ओलेरेसिया किस्म बोट्रीटिस) गोभी वर्गीय सब्जियों में अत्यन्त लोकप्रिय सब्जी है। यह क्रुसीफेरी कुल की सब्जी है इसे कोल क्रॉप भी कहते है। इसका मुख्य विकसित भाग फूल के रूप मे होता है, जिसे कर्ड कहा जाता हैं। कर्ड सामान्यत: श्वेत रंग का होता है। फूलो का रंग किस्मो के अनुसार अलग-अलग होता है। यह भारत के लगभग सभी राज्यो में उगाई जाती है। फूलगोभी शीतोष्ण जलवायु में उगाई जाने वाली मुख्य सब्जी है। फूलगोभी को उचित जल निकास वाली रेतीली दोमट से चिकनी दोमट मृदाओ मे सुगमतापूर्वक उगाया जा सकता है। फूलगोभी की फसल मे कई प्रकार के हानिकारक कीटों का प्रकोप सबसे अधिक बार देखा गया है, जिनके बारे में विस्तृत जानकारी एवं उनके नियंत्रण निम्नलिखित हैं।

माहू

चैंपा का वैज्ञानिक नाम ***ब्रीविकोरीचनेब्रासीकेई लिपाकिस इरीसिमी*** हैं। ये दोनो प्रकार के चैंपा पत्तियो का रस चूसते हैं जबकि लिपाकिस इरीसिमी नामक चैंपा फूलो की गुणवत्ता को खराब करता है। पत्तियो का रस चूसने से पत्ते टेड़े-मेड़े हो जाते है और अधिक प्रकोप के कारण फूल भी नही बनते हैं।

नियंत्रण

- अधिक ग्रसित पत्तो को निकाल कर नष्ट कर दे।
- लेडी बर्ड भृंग का संरक्षण करे।
- सरसो को ट्रेप फसल के रूप में उगाना चाहिए।
- डाइमिथिएट 30 ई सी 2 मि.ली./लीटर या विवनालफॉस 25 ई.सी. 2 मि. ली. या इमिडाक्लोप्रिड 17.8 एस. एल. 1 मि.ली/ 3 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।
- नीम की गिरियो के 4% एक्सट्रेक्ट का छिड़काव करना चाहिए।

हीरक पंतगा कीट

हीरक पंतगा कीट को डायमंड बैंक मोथ कें नाम से भी जाना जाता हैं। इसका वैज्ञानिक नाम ***पिलूतेला एक्सीलोस्टेला*** है। यह फूलगोभी का एक भयंकर कीट है। इस कीट की इल्लियाँ पत्तो के हरे पदार्थ को खाती है तथा खाई गई जगह पर केवल झिल्ली रह जाती है, जो बाद मे छेद में बदल जाती है।

नियंत्रण

- इस कीट के नियंत्रण के लिए नीम बीज अर्क (4%) या स्पिनोसिड 45 एस.सी. 1 मिली./4 लीटर या इमामेक्टिन बेजोस्ट 5 एस. सी 1 ग्राम/2 मिली या क्विनालफॉस 25 ई. सी. 3 मिली/ली. पानी का छिड़काव करें।

लीफ बोरर

लीफ बोरर का वैज्ञानिक नाम ***क्रोसी डोलोमिया विनोटालिस*** हैं। इसके रोएंदार लार्वा का समूह पत्तियो और शीर्षो को क्षति पहुँचाते है और वे सड़ जाते है।

नियंत्रण

- जब फूल निर्माण प्रारम्भ हो जाए तब नीम एक्सट्रैक्ट के 4% घोल का छिडकाव करना चाहिए या 0.05 प्रतिशत फास्फेमिडान छिड़काव करना चाहिए।

गोभी लूपर

गोभी लूपर का वैज्ञानिक नाम ***ट्राइकोप्लुसिया नी*** हैं। डायमंडबैक मोथ की तरह गोभी लूपर भी सबसे अधिक हानिकारक गोभी के कीटों में से एक है। इसके लार्वा पत्तियों के नीचे बड़े छेद

कृषि नवाचार
हिन्दी पत्रिका
ISSN: 3048-6092
https://www.krishinavachar.in
खण्ड 01 भाग 06 सितम्बर, 2024

खाते हैं और विकसित हो रहे गोभी के कर्ड को खाते हैं। ये गोभी के कर्ड को खाते समय एक चिपचिपा पदार्थ छोड़ता हैं। ये कीट विभिन्न प्रकार की फसलों को आसानी से संक्रमित करने की क्षमता रखता है एवं इसको नियंत्रित करने में बढ़ती कठिनाई होती है, क्योंकि गोभी लूपर जैविक कीटनाशकों और सिंथेटिक कीटनाशकों के प्रति प्रतिरोधी होता जा रहा है।

नियंत्रण

- इसको नियंत्रित करने के लिये सेक्स फेरोमोन जाल का प्रयोग करना चाहिये।
- बैसिलस थुरिंजिएंसिस का छिड़काव करना चाहिये।
- गोभी लूपर के रसायनिक नियंत्रण निकोटिनिक सल्फेट @ 0.05% या थियोडान @ 0.015% का छिड़काव करना चाहिये।

तना छेदक

तना छेदक का वैज्ञानिक नाम ***हेलूला अनडेलिस*** हैं। इस कीट के लार्वा रोपाई के तुरंत बाद प्रमुख तने मे छेद कर देते है और कीटग्रस्त पौधो मे शीर्ष निर्माण नही हो पाता है ये पुराने पौधो पर करते है, जो मध्य शिरा या शिराओ को खाते है।

नियंत्रण

- फूलगोभी के साथ सरसो की फसल उगानी चाहिए। प्रति वर्ग मीटर 50-60 पौधे होने चाहिए, ऐसा करने से तना छेदक सरसो के पौधो पर चले जाते है।

आर्द्र विगलन

फूलगोभी का आर्द्र विगलन रोग ***राइजोक्टोनिया सोलेनाई*** **फाइटोफ्थोरा** प्रजाति एवं पीथियम प्रजाति की फफूंदियो के कारण होता है। इस रोग का प्रकोप पौधशाला मे होता है रोग का प्रकोप तने के आधार पर या भूमि के स्तर पर होता है। पौधो के ऊतक जलसिक्त हो जाते है और शीघ्रता से गिर जाते है इसके रोगजनको का प्रकोप अंकुरण के पूर्व या अंकुरण के बाद होता है जिसके कारण पौधे मर जाते है।

नियंत्रण

- पौधशाला वाली भूमि को फार्मेलिन का बीज बोने से 20 दिन पहले भिगोना चाहिए। 5 लीटर फार्मेलिन को 100 ली. पानी मे घोलकर छिड़काव करना चाहिए। बीज तब बोये जब भूमि फंगस मुक्त हो जाये।
- बीज को हमेशा गर्म पानी से उपचारित करके बोये।
- बीज को बोने से पूर्व कार्बेन्डाजिम 0.2% के घोल से उपचारित करें।
- आर्द्र विगलन लगने से पूर्व मैन्कोजेब 0.25% घोल छिड़काव करे ।
- प्रतिवर्ष पौधशाला एक ही स्थान पर न बनायें।

काला विगलन

यह रोग ***जैन्थोमोनास कैम्पस्ट्रिस*** नामक फफूँदी के कारण होता है पत्तियाँ के किनारो पर कीटो द्वारा घाव बना दिये जाते हैं। प्रकोष बिन्दु के ऊतक पीले और हरियाहीन केन्द्र की हो जाती है। जिसके कारण वे मुरझाकर अंग्रेजी के **(V)** की भांति हो जाते हैं, जो आधार से मध्य शिरा की ओर बढ़ते है और बाद में काले रंग के होकर सड़ एवं गल जाती है।

नियंत्रण

- बीज को बोने से पूर्व 30 मिनट तक नल के पानी में भिगोना चाहिए उसके उपरान्त 52° से. तापमान वाले गर्म पानी से 30 मिनट तक रखना चाहिए और बाद मे स्ट्रेप्टोसाइक्लिन के घोल (1 ग्राम/10 लीटर पानी) मे 30 मिनट तक उपचारित करना

ISSN: 3048-6092
https://www.krishinavachar.in
खण्ड 01 भाग 06 सितम्बर, 2024

चाहिए। फिर उन्हें छाया मे सुखाना चाहिए, जब फूलो का निर्माण हो जाए तब स्ट्रोप्टोसाइक्लिन के घोल (10 ग्राम/100 लीटर पानी) का छिडकाव करना चाहिये तथा द्विवर्षीय फसल चक्र अपनाएं।

स्टाक रॉट

यह रोग ***स्केलोरोटिनिया***नामक फफूँदी के कारण होता है। रोग से प्रभावित पौधे मटमैले सफेद हरे रंग के हो जाते हैं और अंत मे पीले रंग के होते जाते है। तनो पर गहरे भूरे से काले रंग के धब्बे बन जाते हैं जो बड़े होकर तने को भूमि स्तर तक ढक लेते हैं। तना सड़ जाता है, फूल अपनी सघनता छोड़ देते है जिसके उपरांत श्वेत विगलन के लक्षण दिखाई देते हैं।

नियंत्रण

- प्रभावित भागो को अलग करके उसे जला देना चाहिए।
- फूल निर्माण से लेकर फलियाँ बनने तक 10-15 दिन के अन्तराल से कार्बेन्डेजिस (0.05%) और मैन्कोजेब 0.25% के मिश्रण का छिड़काव करना चाहिए।

डाउनी मिल्ड्यू

यह रोग ***परनोस्पोरा पेरासिटिका***नामक फफूँदी के कारण होता है। इस रोग के कारण तने पर गहरे भूरे रंग के दबे हुए चक्के बन जाते है। जिससे बाद मे डाउनी फफूँदी की बढ़वार हो जाती है। पत्तियो की निचली सतह पर बैंगनी भूरे रंग के धब्बो का निर्माण हो जाता है। इस रोग के कारण फूलो को अधिक क्षति होती है, क्योकि फूल सड़ जाते है।

नियंत्रण

- बीजो को बोने से पूर्व गर्म पानी का उपचार करना चाहिए फिर बीजो को 0.3 प्रतिशत थाइरम से उपचारित करे।
- फूल के प्रभावित अंग निकाल दे और 0.3 प्रतिशत कॉपर ऑक्साइड का छिड़काव करे।
- फसल को 10-15 दिन के अन्तराल पर 0.2% मेन्कोजेव का छिड़काव करे। प्रथम छिड़काव रोग का प्रकोप होते ही करे।
- खेत मे खरपतवारो को न पनपने दे।
- फसल चक्र अपनाएं।